SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"जनपद पीलीभीत में सहयोगात्मक पर्यवेक्षण का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन"

अमित कुमार शर्मा
प्रवक्ता,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर, पीलीभीत।

महेन्द्र कुमार सिंह
प्राचार्य,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर, पीलीभीत।

शोध सारांश:

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत प्रधानाध्यापक, इंचार्ज प्रधानाध्यापक, सहायक अध्यापक, अनुदेशक तथा शिक्षामित्रों पर जनपद पीलीभीत में सहयोगात्मक पर्यवेक्षण का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव को जानने हेतु शोध कार्य जनपद पीलीभीत के 8 विकास खण्ड क्षेत्रों में से 5 विकास खण्ड क्षेत्रों में सम्पन्न किया गया। जिसमें प्रत्येक विकास खण्ड से यादृच्छिक रूप से चयन करते हुए 15–15 अध्यापकों का चयन करते हुए कुल 75 उत्तरदाताओं से अनुक्रियाएं प्राप्त की गई। प्राप्त अनुक्रियाओं का साक्षात्कार अनुसूची के 35 प्रश्नों का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया गया और निष्कर्ष में पाया गया कि सहयोगात्मक पर्यवेक्षण का प्रभाव विद्यालयी शिक्षा पर सकारात्मक पाया गया, जो कि आत्मीय सम्बन्धों को बढ़ाने, विद्यालय को निपुण बनाने, विद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं के निराकरण करने, शिक्षकों में आपसी समन्वय बढ़ाने के साथ–साथ विद्यालयों को निपुण लक्ष्य प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका पायी गयी।

कूट शब्द– *सहयोगात्मक पर्यवेक्षण, विद्यालयी शिक्षा।*

प्रस्तावना :

शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें समय के साथ–साथ परिवर्तन होते रहे हैं। प्राचीन काल से आधुनिक समय तक शिक्षा व्यवस्था का मूल्यांकन भी किया जाता रहा है। शिक्षा का प्रारम्भ प्राथमिक शिक्षा से होता है, इसलिए आवश्यक है कि हमारे देश में शिक्षा की व्यवस्था करने वाली सरकारें एवं संस्थाएं प्राथमिक विद्यालय के उचित संचालन, संगठन तथा संसाधन की ओर विशेष ध्यान दें।

विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धियों के आधार पर ही शिक्षक का मूल्यांकन किया जाता है और इस मूल्यांकन में विद्यालय के शैक्षिक वातावरण के साथ–साथ पूरी शिक्षा व्यवस्था का भी मूल्यांकन किया जाता है। नई योजनाओं के आधार पर शिक्षण कार्य करने पर छात्रों को उसकी सामग्री के अनुसार शैक्षिक उपलब्धियां प्राप्त करने में सफलता प्राप्त होती है। छात्र की शैक्षिक उपलब्धियों को उसकी सफलता, रुचि, अध्ययन की आदत, वातावरण आदि अनेक कारक प्रभावित करते है। इसलिए एक शिक्षक के लिए परम आवश्यक है कि शिक्षण योजना बनाते समय शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करने वाले कारकों को ध्यान में रखा जाए।

सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को प्रायः तीन भागों में विभाजित किया जाता है– प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा। शिक्षा के इन तीनों स्तरों में प्राथमिक शिक्षा का विशेष महत्व है क्योंकि प्राथमिक शिक्षा ही वह आधार है जिस पर बालक–बालिका का पूरा जीवन निर्भर रहता है। इसलिए शिक्षक को किसी भी देश का निर्माता कहा जाता है। प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु सुनियोजित प्रयास किया जा रहा है। बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि स्तर को कक्षानुरुप बनाने तथा निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ ही उनके व्यक्तित्व सम्बधी विभिन्न आयामों, जैसे– शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक व्यवहार आदि को भी आयु के अनुरुप विकसित करने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है।

उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति में शिक्षकों की भूमिका सर्वोपरि है। उल्लेखनीय है कि जनपद एवं ब्लाक स्तर पर मेंटर्स की टीम नियमित रुप से सहयोगात्मक पर्यवेक्षण के माध्यम से शिक्षकों को प्रभावी कक्षा संचालन में सहयोग प्रदान कर रही है। मेंटर्स एवं शिक्षक के मध्य सार्थक एवं स्वस्थ व्यावसायिक सम्बन्ध व बाल केंद्रित गतिविधियों से युक्त कक्षा शिक्षण के लिए सकारात्मक वातावरण का निर्माण संभव है।

सहयोगात्मक पर्यवेक्षण तभी प्रभावी होता है जब शिक्षक व मेंटर्स के मध्य विश्वास एवं आपसी सहयोग की भावना विकसित हो। प्रभावी सहयोगात्मक पर्यवेक्षण का परिणाम यह होता है कि शिक्षक आंतरिक तौर पर अपने मजबूत व कमजोर पक्ष दोनों के प्रति जागरुक व संवेदनशील होते हैं और तद्नुसार वे योजनाबद्ध तरीके से कमजोर पक्षों पर कार्य करते हैं ताकि उनमें सतत् सुधार हो सके। इस प्रकार कार्य करने से वे सदैव अपनी कक्षा शिक्षण को बच्चों के लिए सहज व रोचक बनाते है, तभी बच्चों का जुड़ाव शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ होता है तथा उनका रचनात्मक रुप से सीखना संभव हो पाता है। इसलिए मेंटर्स एवं शिक्षक के मध्य सहयोगात्मक पर्यवेक्षण के माध्यम से सार्थक व स्वस्थ सम्बन्ध पर बल दिया जाता है।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति मेंटर्स एवं शिक्षकों के मध्य सम्बन्धों को व्यावसायिक दृष्टि से सशक्त करने के लिए आवश्यक है कि सुनियोजित तरीके से मेंटर्स एवं शिक्षकों के मध्य एक विश्वास का वातावरण निर्मित करने का प्रयास किया जाए ताकि विद्यालय सीखने–सिखाने का, रचनात्मक वातावरण बन सके एवं नवीन शैक्षणिक वातावरण का विकास किया जा सके। बाजारवाद, आनलाइन शिक्षण व्यवस्था, बदलते हुए शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध एवं राष्ट्र निर्माण की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मेंटर्स एवं शिक्षकों के मध्य आपसी संवाद, समन्वय एवं आत्मीयता बढ़ाने तथा सहयोगात्मक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अभियान के रुप में सहयोगात्मक पर्यवेक्षण क्रियान्वयन किया जाना आवश्यक है।

कूट शब्दों का परिभाषीकरण

सहयोगात्मक पर्यवेक्षण– सहयोगात्मक पर्यवेक्षण उस दृष्टिकोण को रेखाकिंत करता है जहां पर्यवेक्षक और अधीनस्थ प्रायः विचारों और सूचनाओं का आदान–प्रदान करते हैं और कार्य करने का सर्वोत्तम तरीके का चयन करते हैं।

विद्यालयी शिक्षा– विद्यालयी शिक्षा से तात्पर्य विद्यालय में दी जाने वाली ऐसी शिक्षा से है जिसके द्वारा विद्यार्थी का बहुआयामी विकास सम्भव हो पाता है।

शोध उद्देश्य

विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था पर सहयोगात्मक पर्यवेक्षण के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना

विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था पर सहयोगात्मक पर्यवेक्षण से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध विधि

शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा शोध विधि के लिए वर्णात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श चयन विधि

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु न्यादर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया गया है। जनपद पीलीभीत के कुल 8 विकास खण्डों में से 5 विकास खण्डों का चयन गुच्छ न्यादर्श विधि से करने के उपरान्त प्रत्येक विकास खण्ड से यादृच्छिक न्यादर्श की लाटरी विधि से 15–15 शिक्षकों का चयन करते हुए कुल 75 शिक्षकों का चयन न्यादर्श हेतु किया गया है।

शोध सीमांकन

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन क्षेत्र को निम्नलिखित सीमाओं तक सीमित रखा है–

1. यह शोध कार्य उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद पीलीभीत तक ही सीमित रखा गया है।

2. यह शोध कार्य जनपद पीलीभीत के 5 विकास क्षेत्रों के परिषदीय विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।

3. यह शोध कार्य परिषदीय विद्यालयों के कुल 75 शिक्षकों तक सीमित रखा गया है।

शोध उपकरण

शोध उद्देश्य की दृष्टि से जनपद पीलीभीत में सहयोगात्मक पर्यवेक्षण का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन हेतु स्वयं निर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। शोध उपकरण को मानकीकृत करने के लिए मानकीकृत प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है तदुपरांत मानकीकृत साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग शोध हेतु किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त परिकल्पना के आधार पर प्रयुक्त शोध साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त अनुक्रियाओं का गुणात्मक विश्लेषण करने पर निम्नलिखित व्याख्या की गयी है:

सहयोगात्मक पर्यवेक्षण से प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक–मेंटर्स तथा शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य आत्मीय सम्बंधों पर संतोषजनक प्रभाव पड़ा है। सहयोगात्मक पर्यवेक्षण ने विद्यालयी वातावरण में सीखने की प्रक्रिया को सुगम, सहज और आनन्द–दायक बनाया है। विषयवस्तु आधारित सही और स्पष्ट अवधारणात्मक समझ को विकसित किया है। आस–पास के वातावरण व बिखरे उपकरणों के माध्यम से सीखने पर बल प्रदान किया है। रचनात्मक तार्किक सोच एवं निर्णय लेने की क्षमताओं में अध्यापकों को दक्ष बनाया है।

सहयोगात्मक पर्यवेक्षण ने प्राथमिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों को निपुण विद्यालय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सहयोगात्मक पर्यवेक्षण के दौरान मेंटर्स द्वारा शिक्षक को दिये गये दिशा–निर्देशों ने शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता को बढ़ातें हुए विद्यार्थियों को निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता प्रदान की है।

विद्यालय के शैक्षिक वातावरण के अन्तर्गत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए सहयोगात्मक पर्यवेक्षण ने प्राथमिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण के निर्माण में योगदान दिया है। मेंटर्स द्वारा कक्षा में सहयोग प्रदान करते हुए शिक्षक को उसके शिक्षण पद्धति में नवाचार एवं शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग पर बल देते हुए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाया है।

सहयोगात्मक पर्यवेक्षण ने प्राथमिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक कुशलता में वृद्धि की है। मेंटर्स द्वारा शिक्षकों को शिक्षा में होने वाले नवाचार, तकनीकी एवं व्यावहारिक पक्ष पर ध्यान आकृष्ट कराया है। जिससे परिषदीय विद्यालय के बच्चे निपुण लक्ष्य को प्राप्त करने में सशक्त हो रहे हैं।
सहयोगात्मक पर्यवेक्षण ने विद्यालय के समय–सारणी तथा बालक–बालिका शौचालय के संचालन में, बच्चों के अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरुकता बढ़ायी है तथा अभिभावकों को विद्यालय से जोड़ा है। बच्चों में स्व–अध्ययन को बढ़ावा देते हुए पुस्तकालयों के प्रयोग को बल प्रदान करते हुए अन्य विद्यालयी समस्याओं के निवारण में भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष एवं सुझाव निम्नलिखित है–

1. जनपद पीलीभीत में सहयोगात्मक पर्यवेक्षण का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव सकारात्मक एवं संतोषजनक पाया गया। सहयोगात्मक पर्यवेक्षण ने शिक्षक–मेंटर्स व शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य आत्मीय सम्बंधों को बढ़ाया है। इसलिए सहयोगात्मक पर्यवेक्षण के माध्यम से आत्मीय सम्बंधों को बढ़ाया जा सकता है।

2. सहयोगात्मक पर्यवेक्षण ने निपुण लक्ष्य को प्राप्त करने में अपनी स्पष्ट भूमिका निभाते हुए विद्यालय को निपुण बनाने में योगदान दिया है। निपुण–डैशबोर्ड रिपोर्ट दिसंबर 2023 तक जनपद पीलीभीत कें 635 विद्यालयों में से 103 विद्यालय निपुण घोषित किये जा चुके हैं।

3. सहयोगात्मक पर्यवेक्षण ने विद्यालय के शैक्षिक वातावरण को बेहतर बनाने में योगदान दिया है। इसलिए मेंटर्स की भूमिका परिषदीय विद्यालयों की शिक्षा के लिए कारगर सिद्ध हो रही है।

4. सहयोगात्मक पर्यवेक्षण ने शिक्षकों में व्यावसायिक कुशलता को बढ़ाने के साथ–साथ विद्यालय की समय–सारणी के अनुसार कक्षाओं के संचालन को बढ़ाया है, बालक–बालिकाओं के स्वच्छ शौचालय को क्रियान्वित किया है। बच्चों के अभिभावकों को शिक्षक तथा विद्यालय से जोड़ा है तथा पुस्तकालय के माध्यम से बच्चों में स्व–अध्ययन को बढ़ाते हुए अन्य विद्यालयी समस्याओं का निवारण किया है।

आभार

प्रस्तुत शोध अध्ययन को राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ की वित्तीय सहायता के माध्यम से तथा श्री दरवेश कुमार वरिष्ठ प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर, पीलीभीत के मार्गदर्शन में सम्पन्न किया गया है।

सन्दर्भ

1- Kuramsal Egitimbilim dergisi, 5(1),131-142, Ocak 2012
Journal of Theoretical Educational Science, 5(1), 131-142, January 2012

2- Nurhuda, Nunuk Suryanti, Fitria Jayanti- The Essence of Educational Supervision in Improving Learning Quality, IJLRHSS- Volume 06- Issue 03, 2023

3- Neti Karnati, Faculty of Education, State University of Jakarta, Indonesia – neti.karnati@unj.ac.id

4- कार्यालयः महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, निशातगंज, लखनऊ द्वारा जारी दिशा–निर्देश/आदेश पत्रः–

(1) गुण0वि0/निपुण भारत/1765/2022–23, दिनांक– 12.05.2023

(2) गुण0वि0/निपुण भारत/11221/2022–23, दिनांक– 13.02.2023

5– उ0प्र0शासन, बेसिक शिक्षा अनुभाग–5, पत्र सं0–902/68–5–2019, दिनांक– 22.10.2019

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/25

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अमित कुमार शर्मा एवं महेन्द्र कुमार सिंह

For publication of research paper title

"जनपद पीलीभीत में सहयोगात्मक पर्यवेक्षण का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com